12.3 महत्त्वपूर्ण पात्रों का चरित्र-चित्रण

'मैला आँचल' में कई समीक्षकों को चरित्रों की इतनी भरमार लगती है कि उनमें उन्हें चरित्रों का विशिष्ट व्यक्तित्व उभरता नजर नहीं आता। दूसरी ओर कई चरित्र ऐसे हैं, जिन्हें लेखक ने महत्त्व तो बहुत दिया है, लेकिन जिनका उपन्यास में घटनागत या चरित्रगत उद्घाटन विस्तार से नहीं हुआ है। 'मैला आँचल' के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण निम्नलिखित है–

12.3.1 बावनदास का चरित्र-चित्रण

कई आलोचकों के विचार में 'मैला आँचल' में **बावनदास** न सिर्फ केंद्रीय चरित्र है, वरन् उपन्यास की पूरी आत्मा इस चरित्र के साथ जुड़ी हुई है, यद्यपि उपन्यास में बावनदास बहुत कम समय के लिए अवतरित होता है और कथा के विकास में बहुत कम योगदान करता है। बावनदास के चरित्रांकन में यह अंतर्विरोध जरूर है, लेकिन यह भी सच है कि इस चरित्र में उपन्यास की आत्मा भी बसी हुई है। वास्तव में उपन्यास की धुरी भारतीय जन की स्वतंत्रता व उसके जीवन स्तर पर स्वतंत्रता के वास्तविक प्रभाव से जुड़ी है। इस अर्थ में बावनदास अत्यंत महत्त्वपूर्ण चरित्र है। वह गाँधीवादी जीवन-मूल्यों का जीवंत प्रतीक है। भारतीय समाज को आजादी मिलने के छः महीने के भीतर ही गाँधी जी की भी हत्या होती है और गाँधीवादी जीवन दर्शन व जीवन मूल्यों की भी। गाँधीवादी जीवन दर्शन सामान्य भारतीय जन की कल्याण कामना करता था, लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस सामान्य भारतीय जन की कहीं सुनवाई नहीं हुई, वरन् इसकी 'अपने' शासकों के हाथों और भी दुर्गति हुई। बावनदास की जघन्य हत्या, सामान्यजन की दुर्दशा को प्रतीक रूप में उद्घाटित करती है।

उपन्यास के प्रभुताशाली वर्गों के प्रतिनिधि चरित्र हैं–तहसीलदासर विश्वनाथप्रसाद मल्लिक, ठाकुर रामकिरपालसिंघ, हरगौरी सिंह, खेलावनसिंह यादव तथा दुलारचंद कापरा इत्यादि। लेखक ने इन चरित्रों में स्वार्थ प्रियता, पाखंड व शोषित वर्गों पर बिना संकोच अत्याचार करने तथा अन्तरात्माहीन होने की स्थितियाँ उद्घाटित की हैं, यद्यपि व्यक्तिगत स्तर पर इन चरित्रों में कुछ अंतर भी दृष्टिगोचर होते हैं।

12.3.2 विश्वनाथप्रसाद का चरित्र-चित्रण

विश्वनाथप्रसाद एक हजार बीघा जमीन के मालिक होकर भी अपनी एकमात्र संतान कमली की शादी नहीं कर पाते, जिससे कमली मानसिक रूप से रोगी हो जाती है और डॉ. प्रशांतकुमार का प्रेम ही उसका वास्तविक उपचार कर पाता है। यहाँ लेखक ने तहसीलदार के चरित्र के दो अंतर्विरोधी रूप अंकित किए हैं। एक पिता के रूप में वह अत्यंत स्नेहिल, कोमल हृदय तथा चिंतातुर है जबकि एक जमींदार के रूप में वह क्रूर, स्वार्थी व अत्याचारी है। डॉ. प्रशांत उसके दोनों रूपों को देखता व विश्लेषित करता है। डॉ. प्रशांत स्वयं कमली से प्यार करता है, अतः शोषित वर्गों से सहानुभूति रखकर भी वह विश्वनाथप्रसाद को कई बातों में नापसंद तो करता है, लेकिन उससे नफरत नहीं कर पाता। यही विश्वनाथप्रसाद सिंह अपनी बेटी कमली और प्रशांतकुमार के विवाह की खुशी में अपने असामियों को पाँच-पाँच बीघा जमीन लौटाने की घोषणा भी करता है।

'रेणु' ने दुलारचंद कापरा आदि एकाध शोषक को छोड़कर, जिसका चरित्रांकन वैसे भी सांकेतिक मात्र हुआ है, अपने अन्य शोषक चरित्रों को भी अपनी संवेदना और सहानुभूति दी है। संथालों के हाथों ठाकुर हरगौरी के मारे जाने पर, हालाँकि वह बहुत उद्दंड व अत्याचारी था, लेखक ने उसके परिवार के दुख के अंकन में संवेदना से काम लिया है जबकि आदिवासी संथालों के प्रति अपनी घोषित सहानुभूति के बावजूद उन परिवारों की भीतरी व्यथा-कथा से 'रेणु' आने पाठकों को परिचित नहीं करवाते।

12.3.3 कमली का चरित्र-चित्रण

'मैला आंचल' के प्रमुख स्त्री चरित्रों में से एक **कमली** तहसीलदार की बेटी है। वह युवा और प्रेम की प्यासी है। डॉ. प्रशांत के प्रेम बंधन में बँधकर उसका उपचार होता है, लेकिन इसी प्रेम बंधन में उसके चरित्र के कुछ पहलु

Scanned by CamScanner

भी उभरते हैं। कमली अत्यंत संवेदनशील है, साथ ही वह प्रबुद्ध भी है। डाक्टर की प्रतीक्षा में वह काफी साहित्य पढ़ती है। शरतचंद्र और बंकिमचंद्र जैसे तमाम बंगाली लेखक उसे अच्छे लगते हैं, जिनकी रचनाएँ पढ़-पढ़ कर वह रोती भी है और उनके चरित्रों में अपनी अस्मिता भी जुड़ी देखती है। कमली उन भारतीय स्त्रियों की प्रतिनिधि चरित्र है जो प्रेम के लिए अपना सर्वस्व होम कर सकती है। वह डाक्टर को जी-जान से प्यार करती है और उसके प्रेम में कुँआरी माँ बनने में भी उसे लाज, संकोच या भय नहीं है।

स्व-मूल्यांकन (Self-Assessment)

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें (Fill in the blanks) :

1. महंत सेवादास के कोठारिन दासी ..... के साथ अवैध संबंध हैं।
2. उपन्यास का सर्वाधिक साहसी एवं कर्मठ व्यक्ति ..... है।
3. विश्वनाथप्रसाद की पुत्री का नाम ..... है।

12.3.4 लछमी का चरित्र-चित्रण

कमली को 'रेणु' ने जितनी संवेदना दी है, उतनी ही संवेदना दुखों की मारी **लछमी** को भी दी है। एक अबोध बालिका, जो मठ पर पालने-पोसने, पढ़ाने-लिखाने के लिए महंत सेवादास द्वारा लाई गई, लेकिन जिसने उसके किशोरावस्था में पहुँचते ही उसका दैहिक शोषण आरंभ कर दिया और बेचारी लछमी, वह इस शोषक महंत से घृणा भी नहीं कर सकती, क्योंकि वह उसका अन्य भक्षकों से रक्षक है और उसके जीवन का आधार व सहारा भी। लेकिन स्त्री का दैहिक शोषण कितना भी क्यों न हो, वह सच्चा प्रेम उसी से करती है, जिससे उसके मन का मेल हो और लछमी के मन का मेल है–स्वतंत्रता सेनानी बालदेव जी से। बालदेव जी को भी लछमी आकर्षित करती है और वे भी सामाजिक रूढ़ियों या मूल्यों की परवाह न कर उसके प्रेम बंधन में बँध कर उसके साथ रहने लगते हैं।

लछमी के शोषण द्वारा 'रेणु' ने भारतीय समाज में स्त्री की वास्तविक स्थिति को अंकित किया है, विशेषत: निर्धन स्त्री की। कमली संपत्तिशाली वर्ग की स्त्री है, इसलिए उसे कुछ सामाजिक दर्जा व सुविधा प्राप्त हैं लेकिन लछमी दासी है, जिसे कोई भी महंत अपनी रखेलिन बना सकता है। लछमी के व्यक्तित्व में भी संवेदनशीलता, समझदारी व दबंगता के गुण हैं। लरहिसंघदास जैसे लार टपकाते साधुओं से निपटने की क्षमता भी उसमें विकसित हो गई है।

कमली व लछमी के अतिरिक्त गणेश की नानी, मंगला आदि स्त्री चरित्रों को भी रेणु ने संवेदनशीलता से चित्रित किया है। स्त्री चरित्रों के प्रति रेणु के सृजन में विशेष सौंदर्य बोध है, स्त्री-पुरुष संबंधों में वे उनमुक्तता को भी कोई नकारात्मक मूल्य के रूप में नहीं देखते।

'मैला आँचल' के राजनीतिक व सामाजिक रूप से सक्रिय व महत्त्वपूर्ण चरित्र हैं–बालदेव, कालीचरन, डॉक्टर प्रशांत कुमार, चलित्तर कर्मकार आदि। बावनदास की चर्चा हो चुकी है। ये सभी चरित्र अपने-अपने ढंग से महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन इनमें प्रतिनिधिक समानता मिलती है। ये सभी चरित्र, चाहे किसी भी राजनीतिक विचारधारा के क्यों न हों, मध्यम वर्ग के समान आधार वाले चरित्र हैं, चलित्तर कर्मकार को छोड़कर जो प्रत्यक्ष रूप में कभी सामने नहीं आता, जिसकी सिर्फ चर्चा ही होती है।

12.3.5 बालदेव का चरित्र-चित्रण

बालदेव कांग्रेस कार्यकर्ता व स्वतंत्रता सेनानी हैं। देशभक्ति में उसने यातनाएँ भी सही हैं और कारावास भी भोगा है। स्वभाव से वह कुछ सीधा व भोला जीव है तथा कुछ पिछड़ापन भी उसमें है, क्योंकि उसे लगता है कि "कॉमरेड मुर्गी का अण्डा खिला कर बनाया जाता है।" लेकिन वह ईमानदार व मानवता से प्रेम करने वाला है। गाँव का हित चाहता है। गाँव के राशन डिपो की जिम्मेवारी मिलती है तो भ्रष्टाचार बंद करता है। अस्पताल बनाने में आगे बढ़कर योगदान करता है। लछमी के प्रति आकर्षित होता है तो उसके साथ जीवन साझा करने को भी प्रस्तुत हो जाता है। वह जाति बंधनों से सर्वथा मुक्त है।

Scanned by CamScanner

नोट

12.3.6 कालीचरण का चरित्र-चित्रण

कालीचरन युवा शक्ति का प्रतीक है। उसे कांग्रेस पार्टी से ज्यादा क्रांतिकारी सोशलिस्ट पार्टी आकर्षित करती है, जो 'ज़मीन हलवाहकों को' का नारा देती है तथा संघर्ष का मार्ग दिखाती है। वह 'बम फोड़ने वाले मस्ताने भगत सिंह' से भी प्रभावित है। वह भी संवेदनशील प्रेमी है। मंगला उसे अच्छी लगती है, लेकिन उससे चार हाथ की दूरी वह बनाए रखता है।

12.3.7 चलित्तर कर्मकार का चरित्र-चित्रण

चलित्तर कर्मकार भूमिगत क्रांतिकारी है, जो वर्ग संघर्ष में यकीन रखता है। उसके साथ कोई भी अपने को नहीं जोड़ना चाहता। केवल कम्युनिस्ट पार्टी ने उसके वारंट वापस लेने की मांग कर रखी है।

12.3.8 डॉ. प्रशांत का चरित्र-चित्रण

डॉ. प्रशांत कुमार वास्तव में उपन्यास का केंद्रीय चरित्र है, जो स्वयं लेखक के विचारों का प्रतिनिधि है। डॉ. प्रशांत के चरित्र के विकसित होने का पर्याप्त अवकाश भी उपन्यास में मिलता है व लेखक की संवेदना भी उसे पर्याप्त मात्रा में मिली है।

नोट्स डॉ. प्रशांत सही मायनों में जनहित से जुड़ा बुद्धिजीवी 'कॉमरेड' है, जिसने विदेश का वजीफा छोड़ कर भारतीय देहात का दुख-दर्द महसूस करना, उसे दूर करना तथा पीड़ित जन से जुड़ना अधिक श्रेयस्कर माना।

डॉ. प्रशांत हर स्तर पर मेरीगंज की पीड़ित मानवता से जुड़ता है। वह मलेरिया पर शोध भी करता है, गाँव वासियों को चिकित्सा प्रदान कर जीवनदान भी करता है व उनके दुख-सुख और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग भी बनता है। कमली को अपनी सहचरी बनाकर वह शहर का रहा-सहा आकर्षण भी मन में नहीं रहने देता और जेल से रिहा होकर गाँव को ही अपनी कर्मभूमि बनाने का निर्णय लेता है। हालाँकि शहर में उसे ऊँचा पद, मान-सम्मान, सुख-सुविधा सब कुछ मिल सकता था। आदिवासी संथालों के विद्रोह को यदि किसी चरित्र की सहानुभूति मिली तो वह प्रशांत कुमार ही था। वह कम्युनिस्ट समर्थक समझा जाता था।

लेकिन बालदेव, कालीचरन व प्रशांत में वर्ग चरित्र एक समान है। तीनों ही अपनी मध्यवर्गीय चारित्रिक सीमाओं को पार कर संघर्षशील वर्ग से नहीं जुड़ते। उनकी सहानुभूति वहीं तक हैं, जहाँ तक उनका जीवन व जीवन शैली सुरक्षित है। आदिवासी संथालों के विरूद्ध बालदेव और कालीचरन दोनों गवाही देते हैं और उन्हें आजीवन कारावास दिलवाने में शामिल होते हैं। डॉ. प्रशांत को संथालों से सहानुभूति है, लेकिन इस सहानुभूति को वह सक्रिय रूप नहीं देता। कुल मिलाकर 'मैला आँचल' में लेखक की अपनी वर्ग-सीमाएँ भी मध्यवर्ग तक ही सीमित हैं, इसलिए उनके सर्वश्रेष्ठ चरित्र भी मध्यवर्गों से ही आते हैं, विशेषत: मेहनतकश या संघर्षशील वर्गों से। 'रेणु' स्वयं सोशलिस्ट विचारों से प्रभावित रहे हैं व जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के समर्थक भी, लेकिन बिहार में जन क्रांति वर्ग-संघर्ष के जरिए ही किसी निष्कर्ष तक पहुँचेगी, इस निष्कर्ष तक 'रेणु' नहीं पहुँच पाते।

Scanned by CamScanner